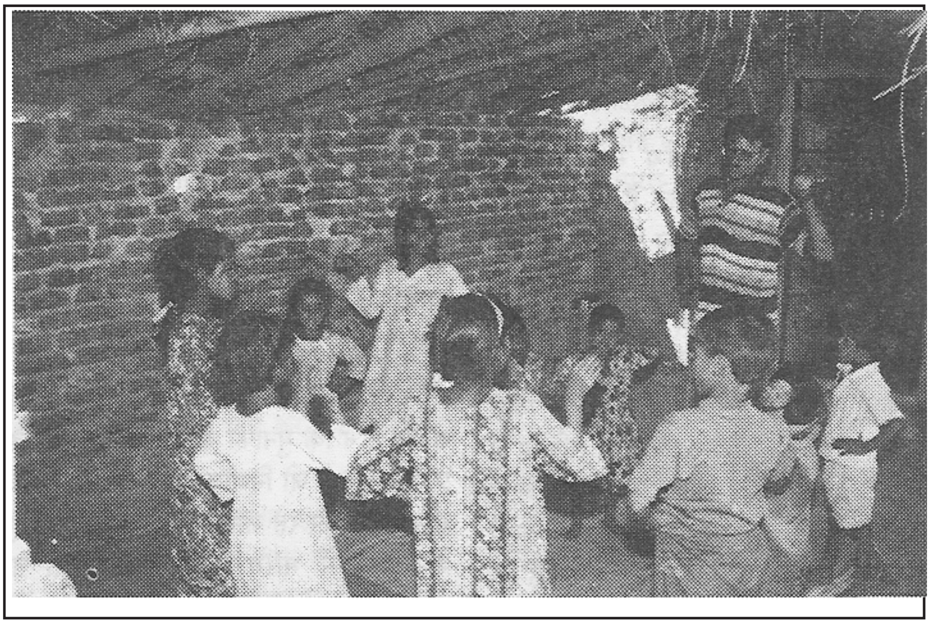
प्राथमिक शिक्षा में गतिविधियाँ

❑ दिलीप सिंह तंवर

शिक्षा में व्यवहारिक गतिविधियों का प्रयोग निर्विवाद है। लेकिन मुश्किल उनके 'व्यवहार' से पैदा होती है। यह माना जाता है कि 'करके सीखा हुआ' ज्यादा स्थायी होता है और यह मान्यता ठीक भी है । किन्तु इधर 'करके सीखने' और 'आनंददायी शिक्षण', 'गतिविधि आधारित शिक्षण' तथा 'खेल-खेल में शिक्षा' जैसी मान्यताओं ने इन प्रक्रियाओं को शिक्षण-तकनीक में 'रिड्यूस' कर दिया है । शिक्षा-दर्शन और व्यापक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य के अभाव में कोई भी शिक्षण विधि न सिर्फ 'तकनीक' या 'उपाय भर रह जाती है बल्कि उसके निरर्थक हो जाने की भी प्रबल आशंका है । प्राथमिक शिक्षा में गतिविधियों के स्थान की तार्किकता और संगति पर यहां विचार किया जा रहा है ।

प्राथमिक शिक्षा में गतिविधियों के महत्व को सभी स्वीकारते हैं । और इनका औचित्य भी है । यह माना जा सकता है कि बच्चा जब शुरू में शाला आता है तो वह एक प्रकार के माहौल से, दूसरे भिन्न प्रकार के माहौल के सम्पर्क में आता है । बच्चा स्वभावत: खेलना, स्वत: कुछ बनाना या करना और मौज-मस्ती करना पसंद करता है । जब तक वह शाला नहीं आता, तब तक वह इन बाल सुलभ क्रीडाओं को करने के लिए प्राय: स्वतंत्र होता है। लेकिन शाला में आने के बाद उसकी स्वतंत्रता और खेलना-कूदना, मौज मस्ती करना कम होता जाता है। और पढ़ने का दबाव बढ़ता जाता है । इसके लिये मात्र शाला ही जिम्मेदार नही है, बल्कि यह दवाब घर पर भी होता है । परिणामत: बच्चे की शाला एवं पढ़ाई दोनों में रुचि कम होती चली जाती है। विद्यालय के प्रति बच्चे की अरुचि के विभिन्न कारणों में से एक शाला में बच्चों के लिए उपयुक्त माहौल का नहीं होना है । अत: शाला में एक ऐसा माहौल बनाने की आवश्यकता है जिसमें बालक सहज रह सके एवं अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके । यह तभी संभव होगा जब शाला का वातावरण भय-रहित हो तथा शिक्षक के साथ बालक के सहज स्नेहपूर्ण संबंध हों । बालक जैसा है उसे उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ स्वीकार किये जाने की आवश्यकता है। इस प्रकार के वातावरण के निर्माण में गतिविधियां महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं ।



लेकिन आज शिक्षा के क्षेत्र में गतिविधियों की बात विभिन्न मुखौटों में बडे जोर शोर से हो रही हैं, जैसे सीखने का आनन्द, खेल खेल में शिक्षा, आनन्ददायी शिक्षा, गतिविधि आधारित शिक्षा, बाल केन्द्रित शिक्षा आदि । इनके लिए जगह-जगह शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें काफी मात्रा में संसाधनों का उपयोग हो रहा है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को नवाचार के माध्यम से किसी एक शिक्षण-बिन्दु पर कोई गतिविधि बता दी जाती है जिसके आनन्ददायी होने का दावा भी किया जाता है। शिक्षक बताई गई इन गतिविधियों को बच्चों के साथ यांत्रिक ढंग से लगातार दोहराते रहते है।

यहां हमें सचेत रहना होगा कि किस गतिविधि को चुनें व किसे नहीं चुने ? क्या किसी भी गतिविधि को सिर्फ आनंददायी

होने के आधार पर चुना जा सकता है ? क्या ज्यादा आनंद देने वाली गतिविधि शिक्षण के लिए ज्यादा उपयुक्त होती है ? गतिविधियों को चुनते समय गहराई से चिंतन करना होगा एवं सचेत रहना होगा। कहीं ऐसा न हो जाये कि हमारी शिक्षा में आनंद ही आनंद रह जाये और सीखना-सिखाना आदि चीजें गौण हो जायें।

यदि किसी गतिविधि को चुनने में सावधानी बरतनी है, तो इसके लिये किसी भी गतिविधि को कक्षा में काम में लेने से पूर्व उसे जांचना होगा । देखना होगा कि उस गतिविधि से सीखना-सिखाना होगा भी या नहीं ? यदि होगा भी तो कितना और कैसा?

इस प्रकार की जांच के लिए किसी न किसी कसौटी की आवश्यकता होगी जिससे इन आनंददायी कही जाने वाली गतिविधियों को जांचा जा सके । इस प्रकार की कसौटी बनाने के लिये प्रश्न उठाने होंगे, जैसे शिक्षा किसलिये ? शिक्षा कैसे दें ? बच्चे सीखते कैसे हैं ? शिक्षा में आनंद की आवश्यकता क्या है ? एवं कितना आनंद ? क्या ज्ञान हमेशा आनंद की अनुभूति से प्राप्त होता है ? यदि नहीं तो क्या बच्चे को इस बात का अहसास कराने कि आवश्यकता है या नहीं कि ज्ञान निर्माण के लिए पसीना बहाना पडता है, मेहनत करनी होती है ? क्या इस बात की पूर्व-तैयारी प्राथमिक शिक्षा में हो ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि बच्चा सीखने की प्रक्रिया में एवं समस्या समाधान में ही आनंद की अनुभूति करता हो । यदि यह बात ठीक है तो फिर ज्ञान प्राप्ति में आनंद को बाहर से अनावश्यक रूप से लाया जाये या नहीं ? इस पर सोचना होगा ?

अब हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि किसी गतिविधि को आखिर किन आधारों पर चुना जाये ?

कोई भी शैक्षणिक गतिविधि किसी न किसी शिक्षण प्रक्रिया का भाग होती है ।

शिक्षण-प्रक्रिया सीधे सीधे निम्न चीजों के द्वारा निर्धारित होती है :

1. शिक्षा के उद्देश्य
2. शिक्षाक्रम
3. बच्चे सीखते कैसे हैं ?

अब यहां देखना होगा कि गतिविधि में ऐसा तो कुछ नहीं हो रहा है जो इन तीनों में से किसी एक के भी साथ विरोधाभासी हो।

अत: किसी भी गतिविधि को शिक्षण हेतु उचित व अनुचित ठहराने के लिए कसौटी बनाने हेतु शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षाक्रम व बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में स्पष्ट होना होगा । तभी किसी कसौटी का निर्माण किया जा सकता है व इसके आधार पर किसी गतिविधि को उपयुक्त व अनुपयुक्त कहा जा सकेगा ।

अत: किसी भी गतिविधि को शिक्षण हेतु उचित व अनुचित ठहराने के लिए कसौटी बनाने हेतु शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षाक्रम व बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में स्पष्ट होना होगा । तभी किसी कसौटी का निर्माण किया जा सकता है व इसके आधार पर किसी गतिविधि को उपयुक्त व अनुपयुक्त कहा जा सकेगा।

यदि शिक्षा का उद्देश्य किसी तानाशाही शासन के लिए नागरिकों का निर्माण करना है तो हमें शिक्षा में कम से कम अनुशासन (आरोपित) को बहुत महत्ता देनी होगी ताकि वे आगे चल कर आदेशों का बिना 'क्यों' पूछे पालन कर सकें। इस प्रकार की शाला में बच्चों को प्रश्न करने की छूट भी नहीं होगी ।

यदि शिक्षा का उद्देश्य किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये नागरिकों का निर्माण करना है तो हमें शाला में काम दूसरे ढंग से करना होगा । देखना होगा कि लोकतंत्र के लिये नागरिक में क्या क्या गुण हों ? उन गुणों को प्राथमिक शाला से पैदा करना प्रारंभ किया जायेगा ।

लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि नागरिक निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी निभायें । लोकतांत्रिक प्रक्रिया मे निर्णय लेने वाले लोग जितने अधिक होंगे वह राष्ट्र लोकतंत्र के उतना ही करीब होगा । जबकि निर्णय लेने वाले लोग कम होंगे तो निर्णय कुछ ही लोगों तक सिमट कर रह जायेगा और लोकतंत्र से दूरी बढ़ती जायेगी। निर्णय लेने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है जो शिक्षा से प्राप्त होगा। लोकतंत्र के लिए यह भी आवश्यक है कि निर्णय व्यक्ति का स्वयं का हो । उसके द्वारा समझ कर लिया गया हो । इसके लिये हमें स्वायत्तता की आवश्यकता होगी । अत: शिक्षा में भी हमें स्वायत्तता देनी होगी ।

ये निर्णय सिर्फ विचार के स्तर पर हैं इन्हें वस्तु या कर्म में परिणित करना होगा जिसके लिए कौशलों की आवश्यकता होगी। अत: हमें शिक्षा द्वारा इन सामान्य कौशलों का विकास करना होगा। विचार को कर्म में बदलते ही समस्या खडी होती है वह यह कि हम समाज में रहते हैं, हमारा संबंध अन्य लोगों से होता है। अत: हमारे कार्यों का प्रभाव दूसरे लोगों पर पडता है । यहां हमें यह देखना होगा कि मेरे कर्मों द्वारा दूसरे पर क्या प्रभाव पड रहा है ? यदि यही

कर्म मेरे लिये कष्टदायी है तो दूसरे के लिए भी उतना ही कष्टदायी होगा । अत: यहां लोगों में संवेदना का होना आवश्यक है । संवेदनशीलता का विकास भी हमें शिक्षा द्वारा करना होगा । ज्ञान एवं संवेदनशीलता द्वारा उस व्यक्ति में मूल्यों का विकास हो सकेगा।

अत: हमें लोकतंत्र के लिए नागरिक तैयार करने हेतु शिक्षा द्वारा ज्ञान, संवेदनशीलता, स्वायत्तता एवं कौशलों का विकास करना होगा इस बात को इस तरह भी कहा जा सकता है कि लोकतंत्र के लिये विवेकपूर्ण स्वायत्तता, संवेदनशीलता व सामान्य कौशलों युक्त नागरिक की अवधारणाओं पर काम करना है ।

इसके लिये शिक्षण-विधि में निम्न तत्व होने चाहिये :

- बच्चा समझ कर सीखे ।

- शिक्षण-विधि ऐसी हो जो सीखने में स्वावलंबी बनाए ।

सीखने में स्वावलंबी होने के लिए आवश्यक है कि बच्चा स्वयं के प्रयासों से सीखे, बच्चे को ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया से गुजरना पडे एवं बच्चे को समस्या समाधान के अवसर मिलें । इसके अलावा स्वावलंबी होने के लिए शाला में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाना होगा । बच्चों को निर्णयों में भागीदारी देनी होगी ।

समझ कर सीखने के लिये आवश्यक है कि शिक्षण रुचिपूर्ण है क्योंकि किसी भी रुचिकर चीज को अरुचिकर चीज की अपेक्षाकृत ज्यादा लम्बे समय तक याद रखने की संभावना अधिक होती है। अत: रुचिकर सीखे हुये के ज्यादा स्थायी होने की संभावना अधिक होती है । यहां शिक्षक को सचेत रहना होगा कि शिक्षण गतिविधि को ज्यादा रुचिकर बनाने से बच्चे की सीखने की गति मंद न हो जाये। यहां भी शिक्षक को गति से ज्यादा प्राथमिकता अवधारणा को समझने पर देनी होगी ।

गतिविधि को उचित या अनुचित कहने के लिए यह देखना भी आवश्यक होगा कि बच्चे सीखते कैसे हैं ? बच्चों के सीखने के बारे में एकमत यह है कि बच्चे अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अनुभव प्राप्त करते हैं । इन अनुभवों के आधार पर अवधारणायें बनाते हैं, फिर नये अनुभव प्राप्त होने पर पुराने अनुभवों से संबंध देखते हैं और पुन: अवधारणायें बना कर निष्कर्ष निकालते हैं । अत: शिक्षण विधि में बच्चों को अनुभव प्राप्ति के अवसर उपलब्ध कराये जायें व पूर्वानुभवों से शिक्षण-बिन्दु का संबंध जोडा जाये ।

गतिविधि को उचित या अनुचित कहने के लिए यह देखना भी आवश्यक होगा कि बच्चे सीखते कैसे हैं ? बच्चों के सीखने के बारे में एकमत यह है कि बच्चे अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अनुभव प्राप्त करते हैं। इन अनुभवों के आधार पर अबधारणायें बनाते हैं, फिर नये अनुभव प्राप्त होने पर पुराने अनुभवों से संबंध देखते हैं और पुन: अवधारणायें बना कर निष्कर्ष निकालते हैं । अत: शिक्षण विधि में बच्चों को अनुभव प्राप्ति के अवसर उपलब्ध कराये जायें व पूर्वानुभवों से शिक्षण-बिन्दु का संबंध जोडा जाये।

बच्चों के सीखने के बारे में एक बात और कही जाती है कि भय एवं डर बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में बाधा पहुंचाते हैं । अत: शिक्षक को यहां ध्यान रखना होगा कि गतिविधि ऐसी हो जिसमें भय एवं डर उत्पन्न न होने पाये या सीखने की प्रक्रिया में कोई बाधा उत्पन्न न होने पाये । भय एवं डर न होने का आशय यह कदापि नहीं है कि गतिविधि में आनन्द ही आनन्द हो । लेकिन यहां आवश्यकता हो जाती है कि बच्चा शाला में अपने आपको सुरक्षित महसूस करे एवं सहज रहे ।

अब यदि लोकतंत्र के लिये विवकपूर्ण स्वायत्तता, संवेदनशीलता एवं सामान्य कौशलों से युक्त नागरिकों को तैयार करने के लिये शिक्षा में प्रयुक्त गतिविधियों को जांचने की कसौटी का निर्माण करे तो वह कुछ इस प्रकार की हो सकती है ।

गतिविधि ऐसी हो जिसमें

- बच्चा सीखने में स्वावलंबन की ओर बढे ।
- बच्चे के पूर्वज्ञान का उपयोग किया जाये ।
- बच्चे कोसमस्या समाधान के अवसर उपलब्ध हों ।
- बच्चे को विभिन्न प्रकार की ज्ञान-निर्माण प्रक्रियाओं से गुजरना पडे ।
- बच्चा समझ कर सीखे ।
- सीखने की गति सहज व उपयुक्त हो ।
- सीखा गया स्थाई हो ।
- बच्चा शाला में सहज रहे ।

यह एक मात्र व अंतिम कसौटी नहीं है । इस प्रकार की अनेक कसौटियों का निर्माण किया जा सकता है ।

अत: आवश्यकता है किसी भी गतिविधि को चुनने से पूर्व उसके उपयुक्त व अनुपयुक्त होने के लिए प्रश्न खडे कर पाने की, उसे परखने की, न कि सिर्फ आनन्ददायी होने के कारण अपनाने की ।◆